• पूजा...

## दुर्गा अष्टमी पर करें ये काम

इस समय मां आदिशक्ति की उपासना का पावन पर्व चैत्र नवरात्र चल रहा है। नवरात्र के आठवें दिन को महाअष्टमी या दुर्गा अष्टमी के रूप में जाना जाता है। इस दिन देवी दुर्गा के आठवें स्वरूप मां महागौरी की पूजा की जाती है। मान्यता है कि अष्टमी तिथि पर सच्चे मन से मां महागौरी की पूजा-अर्चना करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस दिन जप, अनुष्ठान व पूजा पाठ करने से अनंत फल की प्राप्ति होती है। मां महागौरी को ममता की मूरत कहा जाता है। माता रानी के इस स्वरूप की पूजा करने वाले भक्तों के सारे बिगड़े काम बन जाते हैं। साथ ही सभी तरह की बीमारी से मुक्ति मिलती है। इसके अलावा जीवन में तरक्की के लिए इस दिन कुछ विशेष भी करने चाहिए। आइए जानते हैं उन उपायों के बारे में...

▶ महा अष्टमी के दिन मां दुर्गा को लौंग की माला और लाल गुलाब के फूल की माला जरूर अर्पित करें। ऐसा करने से मां अंबे आपके सभी कष्टों को दूर करके मनोकामना पूरी करेंगी।

▶ चैत्र नवरात्रि की अष्टमी तिथि पर मां अंबे को लाल रंग की चुनरी में सिक्के और बताशे रख

कर चढ़ाएं। कहा जाता है कि ऐसा करने से माता रानी जातक की सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

▶ महा अष्टमी के दिन कन्या पूजन भी किया जाता है। इस दिन कन्या पूजन के दौरान 9 कन्याओं को उनके पसंद का भोजन कराने के बाद उनकी जरूरत की कोई भी लाल रंग की चीज भेंट करें। ऐसा करने से माता रानी की कृपा आप पर बनी रहती है।

▶ चैत्र नवरात्रि में महा अष्टमी के दिन तुलसी के पौधे के पास नौ दीपक जलाएं। इसके बाद उनकी परिक्रमा भी करें। ज्योतिष के अनुसार, ऐसा करने से घर से सभी रोग-दोष का नाश होता है।

▶ अष्टमी तिथि के दिन मां दुर्गा को सुहाग का सामान भेंट करनी चाहिए। फिर बाद में उस सामान को सुहागन महिला को दे दें। मान्यता है कि जो भी भक्त नवरात्रि की अष्टमी तिथि को माता को सुहाग का सामान भेंट करता है, उसके घर सुख-समृद्धि आती है और अखंड सौभाग्य का वरदान मिलता है। वहीं अगर कोई महिला सुहाग का सामान भेंट कर रही है तो वह महिला भी सोलह शृंगार करके ही यह सामान माता को भेंट स्वरूप दें।

• शुभता...

## घर में शंख

शंख की उत्पत्ति समुद्र से हुई है। हिन्दू पौराणिक कहानियों में जब देवताओं और दानवों के बीच समुद्र मंथन हुआ था, तो 14 रत्नों में से शंख भी समुद्र से निकला था। समुद्र से ही देवी लक्ष्मी भी प्रकट हुई थी, इसलिए माना जाता है कि शंख पर देवी लक्ष्मी की विशेष कृपा होती है। घर में शंख रखने से आप पर माता लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। घर में शंख रखने से कुछ नियम जुड़े हुए हैं, जिनका आपको पालन जरूर करना चाहिए। आइए, जानते हैं शंख से जुड़े नियम।

▶▶ समुद्र मंथन से 14 रत्नों की प्राप्ति हुई थी। इन रत्नों में से माता लक्ष्मी भी समुद्र से ही प्रकट हुई थी। माता लक्ष्मी की तरह ही शंख भी समुद्र मंथन से प्राप्त हुआ था, इसलिए शंख को बहुत शुभ माना जाता है। माना जाता है कि शंख पर माता लक्ष्मी की कृपा होती है और आप अगर घर में शंख रखते हैं, तो आपको भाग्य का साथ मिलता है, साथ ही धन लाभ के द्वार भी खुल जाते हैं। पूजा-पाठ और धार्मिक कार्यों में शंख बजाने से वातावरण शुद्ध होता है और आपके घर में सुख-समृद्धि का वास होता है। वहीं, वास्तु शास्त्र के अनुसार भी घर में शंख रखने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है लेकिन घर में शंख रखने का शुभ प्रभाव तभी आपको मिल पाएगा, जब आप शंख रखने से जुड़े नियमों का पालन करेंगे। आइए, जानते हैं घर में शंख रखने से जुड़े नियम कौन-से हैं।

▶▶ शंख को रखने की सबसे अच्छी जगह आपके घर का पूजा घर होती है क्योंकि पूजा घर दूसरी जगहों से ज्यादा साफ होता है। आपको पूजा घर में भी हमेशा शंख को भगवान के पास ही रखना चाहिए। शंख को किसी लाल या पीले कपड़े के ऊपर ही रखें। साथ ही इसे ढककर ही रखें। इससे शंख में कोई धूल-मिट्टी नहीं जाएगी और शंख की पवित्रता बनी रहेगी। आप चाहें, तो शंख को वहां भी रख सकते हैं, जहां पर आप पूजा सामग्री रखते हैं।

▶▶ पूजा करने से पहले और बाद में आप जब भी शंख का उपयोग यानी इसे बजाने के बाद इसे हर बार शुद्ध करना बेहद जरूरी है। शंख बजाने के बाद एक कटोरे में पानी और गंगाजल दोनों को मिला लें। अब इसमें शंख को पानी में डुबोकर निकालें। इसके बाद शंख को एक साफ कपड़े से साफ करके सुखाकर फिर से मंदिर में घर दें। इस क्रिया को हमेशा शंख बजाने के बाद जरूर करें। इससे शंख स्वच्छ हो जाता है।

▶▶ शंख को कभी भी जमीन पर नहीं रखना चाहिए। इसे शंख का निरादर माना जाता है। आप शंख को हमेशा एक कपड़े के ऊपर ही रखें। अगर आपको शंख को पानी से साफ करना है, तो भी आप शंख को पानी से निकालकर कपड़े में लपेटकर साफ करें। इसे कभी भी जमीन पर नहीं रखना चाहिए। साथ ही साफ करने के बाद शंख को कपड़े से सही से सुखाने के बाद ही रखें। इस पर पानी की बूंदे नहीं होनी चाहिए।

▶▶ शंख की सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए शंख को सही तरह से रखना भी बहुत जरूरी है। शंख में कभी भी जल भरकर न रखें। शंख का मुंह ऊपर की तरफ करके रखना चाहिए, इससे शंख से निकलने वाली सकारात्मक ऊर्जा पूरे घर में फैली रहती है। शंख को हमेशा भगवान विष्णु, लक्ष्मी और भगवान कृष्ण के पास ही रखें। इससे शुभ का प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

## ऐसे करें रामनवमी की पूजा...

**पंचांग के अनुसार, चैत्र मास की नवमी तिथि का आरंभ 16 अप्रैल के दिन मंगलवार को दोपहर 1 बजकर 23 मिनट से प्रारंभ होगा और नवमी तिथि 17 जनवरी को दोपहर 3 बजकर 15 मिनट तक रहेगी।**

**उदया तिथि में नवमी तिथि होने के कारण रामनवमी का पर्व 17 अप्रैल को मनाया जाएगा। 17 अप्रैल को पूरे दिन रवि योग भी रहने वाला है...**

राम नवमी का पर्व भगवान राम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, भगवान राम का जन्म चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के दिन कर्क लग्न में अभिजीत मुहूर्त में हुआ था। रामनवमी का पर्व चैत्र मास की नवरात्रि के आखिरी दिन होता है। रामनवमी का पर्व भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के कई हिस्सों में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

● **चैत्र मास रामनवमी कब है**-पंचांग के अनुसार, चैत्र मास की नवमी तिथि का आरंभ 16 अप्रैल के दिन मंगलवार को दोपहर 1 बजकर 23 मिनट से प्रारंभ होगा और नवमी तिथि 17 जनवरी को दोपहर 3 बजकर 15 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि में नवमी तिथि होने के कारण रामनवमी का पर्व 17 अप्रैल को मनाया जाएगा। 17 अप्रैल को पूरे दिन रवि योग भी रहने वाला है।

● भगवान राम की कृपा पाने के लिए इस दिन व्यक्ति को रामायण का पाठ और राम रक्षा स्तोत्र का पाठ भी करना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति के जीवन में सुख समृद्धि बनी रहती है। इस दिन भगवान राम के मंदिर में जाकर उन्हें पीले रंग के वस्त्र अर्पित करें। साथ ही पीले रंग के फूलों से बनी माला भी अर्पित कर उनकी स्तुति करें।

**घर में ऐसे करें रामनवमी की पूजा**

● यदि मंदिर जाना संभव न हो तो आप अपने घर में भी पूजा कर सकते हैं।

● पूजा के लिए सबसे पहले एक लकड़ी की चौकी लें। उसपर लाल रंग का एक कपड़ा बिछाएं।

● इसके बाद राम परिवार जिसमें भगवान राम, लक्ष्मणजी, माता सीता और हनुमान जी हो ऐसी मूर्ति गंगाजल से शुद्ध करके स्थापित करें।

● इसके बाद सभी को चंदन या रोली से तिलक करें। फिर उन्हें अक्षत, फूल, आदि पूजन सामग्री चढ़ाएं।

● इसके बाद घी का दीपक जलाकर राम रक्षा स्त्रोत, श्रीराम चालीसा और रामायण की चौपाइयों का पाठ करें।

● आप चाहें तो इस दिन सुंदर कांड के पाठ या हनुमान चालीसा का पाठ भी कर सकते हैं

**धन लाभ के लिए करें ये उपाय**

● राम नवमी के दिन शाम के समय एक लाल कपड़ा लें। फिर उस लाल कपड़े में 11 गोमती चक्र, 11 कौड़ी, 11 लौंग और 11 बताशे बांधकर उस कपड़े को मां लक्ष्मी और भगवान राम को अर्पित कर दें। इस दौरान एक कटोरी में जल लेकर रामरक्षा मंत्र का 108 बार जाप करें। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से आपको धन का लाभ हो सकता है।

● यदि आप रोग से मुक्त होना चाहते हैं, तो राम नवमी की शाम को हनुमान जी के मंदिर में जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। ऐसा करने से आपको रोग से मुक्ति मिल सकती है।

● परिवार में सुख-शांति बनाए रखने के लिए आप राम दरबार के सामने घी या तेल का दीपक जलाएं। इस दौरान 'श्री राम जय राम जय जय राम' का 108 बार जाप करें।

● अगर आपके विवाह में कोई बाधा आ रही है, तो आप रामनवमी की शाम को भगवान राम और माता सीता को हल्दी, कुमकुम और चंदन अर्पित कर सकते हैं। ऐसा करने से बाधाओं से छुटकारा मिल सकता है।

● संतान प्राप्ति के लिए राम नवमी के दिन आप एक नारियल लें। फिर उस नारियल को लाल कपड़े में लपेटकर मां सीता को अर्पित कर दें। इस दौरान *'ऊं नमः शिवाय'* मंत्र का 108 बार जाप करें।

● राम नवमी के दिन किसी भी तरह के तामसिक भोजन का सेवन भूलकर भी ना करें। अपने मन को शुद्ध रखें। अपने जीवन में कभी भी किसी को नुकसान ना पहुंचाएं। सभी के साथ प्रेम पूर्वक रहें।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• ऊर्जा...

## स्नान

सुबह स्नान करना सबसे अच्छा माना जाता है, खासकर सूर्योदय से पहले। यह आपके शरीर को शुद्ध करने और आपको दिन भर ऊर्जावान रखने में मदद करता है। शाम को स्नान करना भी अच्छा माना जाता है, खासकर सूर्यास्त के बाद. यह आपको दिन भर की थकान और नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त करने में मदद करता है। स्नान करते समय अपना मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रखें। अपने बाथरूम को साफ और स्वच्छ रखें। बाथरूम में नकारात्मक ऊर्जा को प्रवेश करने से रोकने के लिए दरवाजे और खिड़कियों को बंद रखें। बाथरूम में दर्पण को सही जगह पर लगाएं। आप चाहें तो बाथरूम में पौधे लगाएं। वास्तु शास्त्र केवल एक मार्गदर्शक है। आपको अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार निर्णय लेना चाहिए।

• अखंड पाठ के नियम...

**पाठ करने वाले व्यक्ति को शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। उन्हें स्नान करना चाहिए, स्वच्छ कपड़े पहनने चाहिए, और मन को शांत रखना चाहिए। पाठ करने वाले व्यक्ति को एकाग्रता और भक्ति भावना के साथ पाठ करना चाहिए। उनका ध्यान पाठ पर होना चाहिए और उन्हें अन्य विचारों से दूर रहना चाहिए। पाठ करते समय कोई भी रुकावट नहीं आनी चाहिए। इसका मतलब है कि पाठ करने वाले व्यक्ति को बीच में रुकना नहीं चाहिए, और उन्हें सभी नियमों का पालन करना चाहिए।**

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित